NEXT IAS

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनाँक: 31-10-2026

विषय सूची

भारत में निर्धनता में कमी की दर वैश्विक स्तर पर सबसे तीव्र दरों में से एक

राजस्थान में हुए नए शोध में जनजातीय खगोल विज्ञान का भारतीय ज्ञान परंपरा से संबंध स्थापित

संयुक्त अरब अमीरात (UAE) के तट के निकट तेल रिसाव से अलवणीकरण संयंत्र प्रभावित

भारत में क्लाउड कंप्यूटिंग पारितंत्र

संक्षिप्त समाचार

- चोलकालीन मूर्तियाँ तमिलनाडु में उत्खनन के दौरान प्राप्त
- राष्ट्रीय एकता दिवस
- राजकोषीय घाटा
- विकसित भारत के लिए बैंकिंग पर उच्चस्तरीय समिति
- डॉ. होमी जहाँगीर भाभा
- बिहार संग्रहालय विश्व के शीर्ष 10 संग्रहालयों में सम्मिलित

भारत में निर्धनता में कमी की दर वैश्विक स्तर पर सबसे तीव्र दरों में से एक

संदर्भ

- विश्व बैंक की अक्टूबर 2026 की रिपोर्ट 'भारत में निर्धनता और समानता संक्षिप्त विवरण: अक्टूबर 2026'' के अनुसार, भारत ने विश्व स्तर पर निर्धनता में कमी लाने की दिशा में सबसे तीव्र प्रगति करने वाले देशों में स्थान प्राप्त किया है।

गरीबी उन्मूलन के क्षेत्र में भारत की प्रगति

- **अत्यधिक निर्धनता में कमी:** अंतरराष्ट्रीय अत्यधिक गरीबी रेखा (2021 की क्रय शक्ति समता के आधार पर 3 डॉलर प्रति व्यक्ति प्रतिदिन) से नीचे जीवनयापन करने वाली जनसंख्या का अनुपात वर्ष 2011 में 27.1% था, जो वर्ष 2023 में घटकर 2.6% रह गया।
- **निम्न-मध्यम आय वाले देशों की गरीबी रेखा के आधार पर निर्धनता में कमी:** 4.20 डॉलर प्रति व्यक्ति प्रतिदिन की गरीबी रेखा के आधार पर निर्धनता का अनुपात वर्ष 2011 में 57.7% था, जो वर्ष 2023 में घटकर 16.1% रह गया। इस अवधि में अनुमानतः 49.6 करोड़ लोग गरीबी से बाहर आए।
- **भविष्य का अनुमान:** विश्व बैंक के अनुसार, 4.20 डॉलर प्रतिदिन की गरीबी रेखा के आधार पर निर्धनता का अनुपात वर्ष 2026 में 14.2% से घटकर वर्ष 2028 तक 12.1% होने की संभावना है।

गरीबी रेखा क्या है?

- गरीबी रेखा आय अथवा उपभोग का वह न्यूनतम निर्धारित स्तर है, जिसके आधार पर यह आकलन किया जाता है कि कोई व्यक्ति अथवा परिवार गरीब है या नहीं।
- इस निर्धारित सीमा से नीचे जीवनयापन करने वाले व्यक्ति को भोजन, आवास, वस्त्र, शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं जैसी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने में असमर्थ माना जाता है।
- गरीबी रेखा सरकार को निम्नलिखित कार्यों में सहायता प्रदान करती है:
  - निर्धनता की व्यापकता का आकलन करने तथा गरीब एवं वंचित वर्गों के लिए कल्याणकारी नीतियों का निर्माण करने में।
  - समय के साथ निर्धनता कम करने और लोगों के जीवन स्तर में सुधार लाने के लिए लागू की गई नीतियों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने में।

निर्धनता में कमी लाने वाले प्रमुख कारक

- **रोजगार के अवसरों का विस्तार:** वर्ष 2017 से 2023 के बीच रोजगार प्राप्त करने वाले लोगों की संख्या में लगभग 13.4 करोड़ की वृद्धि हुई, जो कार्यशील आयु वर्ग की जनसंख्या में हुई वृद्धि से लगभग दोगुनी थी।
- **महिलाओं की बढ़ती श्रम भागीदारी:** ग्रामीण महिलाओं की सवेतन रोजगार में बढ़ती भागीदारी से परिवारों की आय में वृद्धि हुई है तथा प्रति परिवार आय अर्जित करने वाले सदस्यों की संख्या बढ़ी है।
- **सामाजिक सुरक्षा का विस्तार:** खाद्य सब्सिडी एवं सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली अन्य वित्तीय सहायता ने कमजोर वर्गों को आर्थिक आघातों से सुरक्षा प्रदान करने तथा उनके उपभोग स्तर में सुधार करने में सहायता की है।
- **आवश्यक बुनियादी सुविधाओं तक बेहतर पहुँच:** बिजली, स्वच्छता, पेयजल एवं आवास जैसी आवश्यक सुविधाओं की उपलब्धता में वृद्धि से गैर-आर्थिक अभावों में कमी आई है।

सरकार द्वारा उठाए गए प्रमुख कदम

- **प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY):** इस योजना का उद्देश्य युवाओं को उद्योगों की आवश्यकताओं के अनुरूप कौशल प्रशिक्षण प्रदान करना है, ताकि उनकी रोजगार क्षमता में वृद्धि हो तथा रोजगार के नए अवसर उपलब्ध हो सकें।
- **राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (NFSA), 2013:** इस अधिनियम के अंतर्गत देश की लगभग 67% जनसंख्या को अत्यधिक रियायती दरों पर खाद्यान्न प्राप्त करने का कानूनी अधिकार प्रदान किया गया है। इसमें ग्रामीण क्षेत्रों की 75% तथा शहरी क्षेत्रों की 50% जनसंख्या शामिल है।
- **आयुष्मान भारत योजना:** इस योजना के अंतर्गत पात्र परिवारों को प्रतिवर्ष 5 लाख रुपये तक का स्वास्थ्य बीमा कवरेज प्रदान किया जाता है, जिससे उन्हें महँगे चिकित्सा उपचार के कारण उत्पन्न होने वाले वित्तीय भार से सुरक्षा मिल सके।
- **शिक्षा का अधिकार अधिनियम (RTE):** वर्ष 2009 में अधिनियमित इस कानून के अंतर्गत 6 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान किया गया है।
- **दीनदयाल अंत्योदय योजना – राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (DAY-NRLM):** इसका उद्देश्य गरीब परिवारों को लाभकारी स्वरोजगार तथा कौशल-आधारित वेतनभोगी रोजगार के अवसरों तक पहुँच प्रदान करके निर्धनता कम करना है।

निर्धनता में कमी के बावजूद विद्यमान चुनौतियाँ

- **क्षेत्रीय संकेंद्रण:** भारत में निर्धनता का भौगोलिक संकेंद्रण बढ़ता जा रहा है। उत्तर प्रदेश से पश्चिम बंगाल तक फैली हुई सन्निहित क्षेत्रीय पट्टी के राज्यों में देश की कुल गरीब जनसंख्या का लगभग 57% हिस्सा निवास करता है।
- **मजदूरी में बढ़ती असमानता:** वर्ष 2023 में सर्वाधिक आय अर्जित करने वाले शीर्ष 10% श्रमिकों की औसत मध्यिका आय

, सबसे कम आय अर्जित करने वाले निचले 10% श्रमिकों की तुलना में लगभग 13 गुना थी।

- यह दर्शाता है कि रोजगार के अवसरों में वृद्धि आवश्यक रूप से आय के समान एवं न्यायसंगत वितरण में परिवर्तित नहीं हुई है।

- **युवा बेरोजगारी में वृद्धि:** वित्त वर्ष 2026 और वित्त वर्ष 2027 की प्रथम तिमाही के बीच युवा बेरोजगारी दर 14.6% से बढ़कर 15.9% हो गई।
- **निम्न उत्पादकता वाला रोजगार:** रोजगार में हुई अधिकांश वृद्धि अपेक्षाकृत कम उत्पादकता वाले कार्यों एवं गतिविधियों में केंद्रित रही, जिससे पारिवारिक आय और जीवन स्तर में अपेक्षित सुधार सीमित रहा।

आगे की राह

- **श्रम-प्रधान क्षेत्रों का सुदृढ़ीकरण:** वस्त्र उद्योग, खाद्य प्रसंस्करण, पर्यटन एवं निर्माण जैसे श्रम-प्रधान क्षेत्रों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, ताकि उत्पादक एवं सतत आजीविका के अवसरों का सृजन हो सके।
- **संरचनात्मक असमानताओं का समाधान:** निर्धनता से सर्वाधिक प्रभावित क्षेत्रों में अवसंरचना, मानव पूँजी एवं औद्योगिक विकास में लक्षित निवेश के माध्यम से क्षेत्रीय असमानताओं को कम किया जाना चाहिए।
- **निर्धनता के आकलन की व्यवस्था का सुदृढ़ीकरण:** उभरती हुई आर्थिक एवं सामाजिक कमजोरियों की पहचान करने तथा सरकारी योजनाओं को अधिक प्रभावी ढंग से लक्षित करने के लिए नियमित घरेलू उपभोग सर्वेक्षणों एवं बहुआयामी निर्धनता आकलन को सुदृढ़ किया जाना चाहिए।

निर्धनता के आकलन हेतु गठित समितियाँ

- **लकड़ावाला समिति , 1993:** इस समिति का गठन वर्ष 1993 में किया गया था। इसने निर्धनता के आकलन के संबंध में निम्नलिखित सुझाव दिए:
  - उपभोग व्यय की गणना कैलोरी उपभोग के आधार पर की जानी चाहिए।
  - प्रत्येक राज्य के लिए अलग-अलग गरीबी रेखाओं का निर्धारण किया जाना चाहिए।
  - शहरी क्षेत्रों में औद्योगिक श्रमिकों के उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI-IW) तथा ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि श्रमिकों के उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI-AL) के आधार पर गरीबी रेखाओं को समय-समय पर संशोधित किया जाना चाहिए।
- **तेंदुलकर समिति, 2009:** इस समिति का गठन वर्ष 2005 में किया गया था तथा इसने वर्ष 2009 में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की।
  - समिति की प्रमुख सिफारिशें निम्नलिखित थीं:
    - निर्धनता के आकलन में कैलोरी उपभोग पर आधारित पद्धति से हटकर व्यापक उपभोग व्यय को आधार बनाने की सिफारिश की गई।
    - इसमें स्वास्थ्य एवं शिक्षा पर होने वाले निजी व्यय को भी शामिल किया गया।
  - उपभोग व्यय को प्रति व्यक्ति प्रतिदिन के आधार पर विभाजित किया गया, जिसके परिणामस्वरूप शहरी क्षेत्रों के लिए 32 रुपये तथा ग्रामीण क्षेत्रों के लिए 26 रुपये प्रतिदिन की गरीबी रेखा निर्धारित हुई।
  - वर्ष 2011-12 के लिए राष्ट्रीय गरीबी रेखा का अनुमान ग्रामीण क्षेत्रों में 816 रुपये प्रति व्यक्ति प्रतिमाह तथा शहरी क्षेत्रों में 1,000 रुपये प्रति व्यक्ति प्रतिमाह लगाया गया।
- **रंगराजन समिति , 2014:** इस समिति का गठन वर्ष 2012 में किया गया था तथा इसने वर्ष 2014 में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की।
  - समिति की प्रमुख सिफारिशें एवं निष्कर्ष निम्नलिखित थे:
    - ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के लिए अलग-अलग उपभोग बास्केट निर्धारित करने की सिफारिश की गई।
    - रंगराजन समिति ने ग्रामीण क्षेत्रों के लिए गरीबी रेखा 972 रुपये प्रतिमाह (32 रुपये प्रतिदिन) निर्धारित की।
  - शहरी क्षेत्रों के लिए गरीबी रेखा 1,407 रुपये प्रतिमाह (47 रुपये प्रतिदिन) निर्धारित की गई।
  - इन अनुमानों के अनुसार, वर्ष 2011-12 में भारत की कुल जनसंख्या का 29.5% हिस्सा गरीब था।
  - केंद्र सरकार ने रंगराजन समिति की रिपोर्ट पर कोई अंतिम निर्णय नहीं लिया। इसलिए, भारत में निर्धनता का आकलन तेंदुलकर समिति द्वारा निर्धारित गरीबी रेखा के आधार पर किया जाता रहा है।

स्रोत: TH

राजस्थान में हुए नए शोध में जनजातीय खगोल विज्ञान का भारतीय ज्ञान परंपरा से संबंध स्थापित

संदर्भ

- भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT) जोधपुर के शोधकर्ताओं ने पश्चिमी राजस्थान के जनजातीय समुदायों के खगोलीय ज्ञान का दस्तावेजीकरण किया है तथा भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) के साथ इसके संबंधों का अध्ययन किया है।

जनजातीय खगोल विज्ञान के बारे में

- जनजातीय खगोल विज्ञान से तात्पर्य खगोलीय पिंडों, तारों, ग्रहों, ऋतुओं एवं प्राकृतिक चक्रों से संबंधित उस स्वदेशी ज्ञान से है, जिसे जनजातीय समुदायों ने पीढ़ियों से निरंतर अवलोकन के माध्यम से विकसित किया है।
- जनजातीय समुदाय खगोलीय पिंडों की व्याख्या सांस्कृतिक मान्यताओं, लोककथाओं एवं पारिस्थितिक ज्ञान के आधार पर करते हैं।

- धूमकेतुओं को आकाशीय झाड़ू माना जाता है, जो आकाश की गंदगी को साफ करते हैं, जबकि उल्कापिंडों को पूर्वजों की आत्माओं के रूप में देखा जाता है।
- इस अध्ययन में छह जनजातीय समुदायों को शामिल किया गया है: भील, मीणा, बंजारा, गोंड, कोलाम एवं कोरकू।

जनजातीय खगोलीय ज्ञान के प्रमुख तत्व

- **समय की गणना :** जनजातीय समुदाय समय की गणना करने तथा मौसमी परिवर्तनों की पहचान करने के लिए चंद्र चक्रों का उपयोग करते हैं।
- **मौसम का पूर्वानुमान :** वे तारों की स्थिति एवं गति का अवलोकन करके ऋतुओं के परिवर्तन तथा मौसम के स्वरूप का अनुमान लगाते हैं।
- **कृषि संबंधी गतिविधियाँ :** बुवाई एवं कटाई जैसी कृषि गतिविधियों को खगोलीय चक्रों के अनुरूप निर्धारित किया जाता है।
- **अनुष्ठान संबंधी परंपराएँ :** ग्रहण एवं अन्य खगोलीय घटनाओं को विशिष्ट धार्मिक अनुष्ठानों तथा सांस्कृतिक मान्यताओं से जोड़ा जाता है।
- **पारिस्थितिक ज्ञान :** जनजातीय समुदाय खगोलीय गतिविधियों से संबंधित ज्ञान को स्थानीय भू-भाग, वनस्पति एवं प्राकृतिक चक्रों के साथ समन्वित करते हैं।

भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) के साथ संबंध

- यह शोध जनजातीय खगोलीय परंपराओं एवं शास्त्रीय संस्कृत खगोल विज्ञान के बीच विद्यमान समानताओं को उजागर करता है।
  - शास्त्रीय संस्कृत खगोल विज्ञान में गणितीय गणनाओं, ज्यामिति एवं औपचारिक सिद्धांतों का उपयोग किया जाता है, जबकि जनजातीय खगोल विज्ञान मुख्यतः व्यवस्थित अवलोकन एवं पर्यावरण की समझ पर आधारित है।
- यह अध्ययन स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों एवं पारंपरिक गणनात्मक खगोल विज्ञान के बीच अंतःसांस्कृतिक तुलनात्मक अध्ययन को बढ़ावा देता है।

नक्षत्र वाटिका पहल

- IIT जोधपुर के शोधकर्ताओं ने राजस्थान के नांदिया कलां गाँव के निवासियों के सहयोग से अनुपयोगी एवं क्षरित सामुदायिक भूमि पर नक्षत्र वाटिका विकसित की है।
- इस पहल के अंतर्गत सामुदायिक सहभागिता से लगभग 1,000 पौधे लगाए गए हैं।
- इस पहल में जामुन, गूलर, पीपल, खेजड़ी, चमेली एवं बरगद जैसे पौधों को विभिन्न नक्षत्रों एवं राशियों से जोड़ा गया है।
- इसका उद्देश्य औषधीय पौधों का संरक्षण करना, जैव विविधता की रक्षा करना तथा संवेदनशील पारिस्थितिकी तंत्रों का पुनर्स्थापन करना है।

जनजातीय खगोल विज्ञान का महत्त्व

- **स्वदेशी ज्ञान का संरक्षण :** यह जनजातीय समुदायों के मौखिक इतिहास, अनुष्ठानों, खगोलीय अवलोकनों एवं पारिस्थितिक मान्यताओं के दस्तावेजीकरण और संरक्षण में सहायता करता है।
- **जलवायु परिवर्तन के अनुकूलन :** मौसमी चक्रों से संबंधित पारंपरिक ज्ञान पर्यावरणीय परिवर्तनों को समग्र रूप से समझने के लिए आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोणों का पूरक बन सकता है।
- **सतत कृषि :** प्राकृतिक चक्रों की स्वदेशी समझ पर आधारित ज्ञान स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल कृषि पद्धतियों के विकास में योगदान दे सकता है तथा सतत कृषि को बढ़ावा दे सकता है।
- **जैव विविधता का संरक्षण :** नक्षत्र वाटिका जैसी पहल देशज एवं औषधीय पौधों की प्रजातियों के संरक्षण को प्रोत्साहित करती हैं।
- **सामुदायिक सहभागिता :** सतत विकास के समाधान तैयार करने में जनजातीय समुदायों के ज्ञान को मान्यता देने से सामुदायिक सहभागिता एवं समावेशन को बढ़ावा मिलता है तथा राष्ट्र निर्माण में उनकी भागीदारी सुदृढ़ होती है।

चुनौतियाँ

- आधुनिकीकरण एवं सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तनों के कारण पारंपरिक ज्ञान का धीरे-धीरे लुप्त होने का खतरा है।
- जनजातीय खगोलीय ज्ञान का अधिकांश हिस्सा मौखिक परंपराओं के माध्यम से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित होता है तथा इसका व्यवस्थित दस्तावेजीकरण सीमित है।
- स्वदेशी ज्ञान एवं औपचारिक वैज्ञानिक अनुसंधान के बीच सीमित समन्वय इसके व्यापक उपयोग को बाधित कर सकता है।

आगे की राह

- स्वदेशी खगोलीय ज्ञान, मौखिक इतिहास एवं पारंपरिक पारिस्थितिक पद्धतियों का व्यवस्थित रूप से दस्तावेजीकरण किया जाना चाहिए।
  - इसके लिए जनजातीय समुदायों, शोधकर्ताओं एवं वैज्ञानिक संस्थानों के बीच सहयोग को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
- इस पारंपरिक ज्ञान को जैव विविधता संरक्षण, जलवायु परिवर्तन के अनुकूलन एवं सतत कृषि के साथ एकीकृत किया जा सकता है।
- यह सुनिश्चित करने के लिए एक प्रभावी तंत्र विकसित किया जाना चाहिए कि जनजातीय समुदायों को उनके पारंपरिक ज्ञान के लिए उचित मान्यता मिले तथा उसके उपयोग से संबंधित निर्णय लेने की प्रक्रिया में उनकी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित हो।

स्रोत: TH

संयुक्त अरब अमीरात (UAE) के तट के निकट तेल रिसाव से अलवणीकरण संयंत्र प्रभावित

संदर्भ

- संयुक्त अरब अमीरात (UAE) के तट के निकट हुए तेल रिसाव ने पर्यावरणीय प्रदूषण के खतरे तथा अलवणीकरण संयंत्रों पर इसके संभावित प्रभाव को लेकर चिंताएँ बढ़ा दी हैं।

अलवणीकरण संयंत्र क्या हैं?

- अलवणीकरण संयंत्र समुद्री जल से नमक एवं अन्य खनिजों को हटाकर उसे स्वच्छ पेयजल में परिवर्तित करते हैं।
- इसके लिए सबसे व्यापक रूप से उपयोग की जाने वाली विधि रिवर्स ऑस्मोसिस है। इस प्रक्रिया में समुद्री जल को अत्यंत सूक्ष्म झिल्लियों से उच्च दबाव के माध्यम से गुजारा जाता है, जो जल से नमक एवं अन्य अशुद्धियों को अलग कर देती हैं।
- इस प्रक्रिया से प्राप्त स्वच्छ जल का उपयोग क्षेत्र में घरेलू आवश्यकताओं, उद्योगों, होटलों तथा कुछ कृषि गतिविधियों के लिए किया जाता है।

खाड़ी क्षेत्र के लिए ये इतने महत्त्वपूर्ण क्यों हैं?

- खाड़ी क्षेत्र के अनेक देश अलवणीकृत जल पर अत्यधिक निर्भर हैं, क्योंकि वहाँ नदियों एवं बड़ी झीलों जैसे प्राकृतिक मीठे जल स्रोतों का अभाव है।
- संयुक्त अरब अमीरात (UAE) में पेयजल की कुल आपूर्ति का 80% से अधिक हिस्सा अलवणीकृत जल से प्राप्त होता है।
- यहाँ के प्रमुख अलवणीकरण संयंत्रों में दुबई के जेबेल अली औद्योगिक बंदरगाह तथा अबू धाबी और दुबई के बीच स्थित तवीला के संयंत्र शामिल हैं।
- ये संयंत्र कुवैत की लगभग 90%, ओमान की 86% तथा सऊदी अरब की 70% जल आवश्यकताओं को पूरा करते हैं।
- IFRI की रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2030 तक पश्चिम एशिया में अलवणीकरण क्षमता लगभग दोगुनी होने की संभावना है।

क्या आप जानते हैं?

- वर्ष 1991 में खाड़ी युद्ध के दौरान तेल का एक बड़ा रिसाव हुआ था, जो इतिहास के सबसे बड़े तेल रिसावों में से एक था।
- इसके परिणामस्वरूप सऊदी अरब एवं कुवैत के कई अलवणीकरण संयंत्रों को बंद करना पड़ा था तथा समुद्र तट के विस्तृत क्षेत्रों में गंभीर प्रदूषण फैल गया था।

अलवणीकरण संयंत्रों से संबंधित चुनौतियाँ एवं जोखिम

- **समुद्री प्रदूषण :** कच्चा तेल एक प्राकृतिक उत्पाद है और समुद्री पर्यावरण में धीरे-धीरे विघटित हो सकता है। हालाँकि, समुद्री जल में इसके प्रवेश से गंभीर पर्यावरणीय क्षति हो सकती है।
  - तेल के प्रदूषण से बचाव के लिए जैसे ही तेल अलवणीकरण संयंत्रों के जल-ग्रहण केंद्रों के निकट पहुँचता है, संयंत्रों को तत्काल बंद करना आवश्यक हो सकता है।
- **अलवणीकरण संयंत्रों का निष्क्रिय होना :** विशेषज्ञों के अनुसार, यदि प्रमुख अलवणीकरण संयंत्र निष्क्रिय हो जाते हैं, तो बड़े शहर कुछ ही दिनों में अपनी अधिकांश पेयजल आपूर्ति खो सकते हैं।
  - वर्ष 2010 में अमेरिकी केंद्रीय खुफिया एजेंसी (CIA) द्वारा किए गए एक विश्लेषण में चेतावनी दी गई थी कि अलवणीकरण सुविधाओं पर हमले खाड़ी क्षेत्र के कई देशों में राष्ट्रीय संकट उत्पन्न कर सकते हैं।
  - इस क्षेत्र के 90% से अधिक अलवणीकृत जल की आपूर्ति केवल 56 संयंत्रों से होती है, जिससे ये संयंत्र तोड़फोड़ अथवा सैन्य कार्रवाई के प्रति अत्यधिक संवेदनशील हो जाते हैं।
- **जलवायु परिवर्तन :** युद्ध के अतिरिक्त जलवायु परिवर्तन भी अलवणीकरण संबंधी बुनियादी ढाँचे के लिए जोखिम बढ़ा रहा है।
  - समुद्र के बढ़ते तापमान तथा अरब सागर में अधिक शक्तिशाली चक्रवातों से तटीय संयंत्रों को खतरा हो सकता है।
  - तूफानी ज्वार एवं अत्यधिक वर्षा से संयंत्रों को हानि पहुँच सकता है अथवा उनकी जल निकासी प्रणालियाँ प्रभावित हो सकती हैं।
- **उत्सर्जन एवं प्रदूषण :** अलवणीकरण एक ऊर्जा-गहन प्रक्रिया है। विश्वभर में इस प्रक्रिया से प्रतिवर्ष लगभग 50 करोड़ से 85 करोड़ टन कार्बन उत्सर्जन होता है।
  - इस प्रक्रिया में अत्यधिक सांद्रता वाला लवणीय अपशिष्ट जल भी उत्पन्न होता है, जिसे प्रायः वापस समुद्र में छोड़ दिया जाता है।
  - यह अपशिष्ट जल प्रवाल भित्तियों सहित समुद्री पारिस्थितिकी तंत्रों को हानि पहुँचा सकता है।

रोकथाम एवं प्रभावों का न्यूनीकरण

- वर्तमान घटना के संदर्भ में, प्राथमिकता यह सुनिश्चित करना होनी चाहिए कि तेल अलवणीकरण संयंत्रों के जल-ग्रहण केंद्रों तक न पहुँचे, जल उपचार उपकरणों की सुरक्षा बनी रहे तथा पेयजल की सुरक्षित एवं विश्वसनीय आपूर्ति जारी रहे।
- **बहुस्तरीय सुरक्षा व्यवस्था:** सबसे प्रभावी रणनीति किसी एक उपाय पर निर्भर रहने के बजाय सुरक्षा की कई परतें विकसित करना है, ताकि तेल रिसाव एवं अन्य संभावित खतरों से अलवणीकरण संयंत्रों की प्रभावी सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

स्रोत: DD

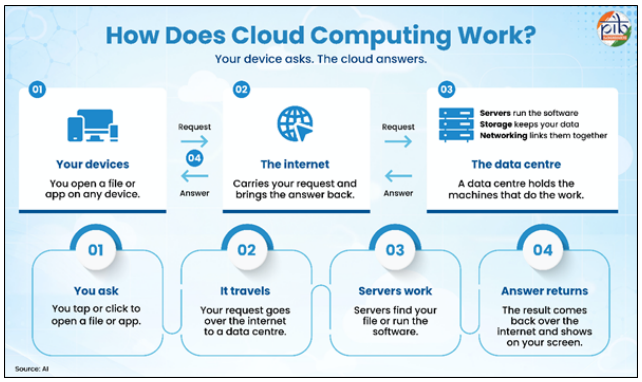
भारत में क्लाउड कंप्यूटिंग पारितंत्र

संदर्भ

- भारत में डिजिटल तकनीकों को तीव्रता से अपनाए जाने के कारण विश्वसनीय डेटा अवसंरचना की माँग बढ़ रही है। इस परिप्रेक्ष्य में डेटा के भंडारण तथा डिजिटल सेवाओं को संचालित करने के लिए क्लाउड कंप्यूटिंग एक केंद्रीय भूमिका निभा रही है।

क्लाउड कंप्यूटिंग क्या है?

- क्लाउड कंप्यूटिंग एक ऐसी तकनीक है, जिसके माध्यम से उपयोगकर्ता इंटरनेट के जरिए कंप्यूटिंग संसाधनों, जैसे डेटा स्टोरेज, सर्वर, सॉफ्टवेयर एवं डेटा प्रोसेसिंग क्षमताओं तक पहुँच प्राप्त कर सकते हैं।
  - स्वयं के सर्वर खरीदने एवं उनका रखरखाव करने के बजाय संगठन अपनी आवश्यकता के अनुसार इन संसाधनों का उपयोग कर सकते हैं।
  - **उदाहरण:** गूगल ड्राइव उपयोगकर्ताओं को अपने दस्तावेज ऑनलाइन संग्रहीत करने तथा विभिन्न उपकरणों के माध्यम से उन तक पहुँच प्राप्त करने की सुविधा प्रदान करता है।
- क्लाउड कंप्यूटिंग भौतिक अवसंरचना पर निर्भर करती है। डेटा सेंटर में वे सर्वर, स्टोरेज सिस्टम एवं नेटवर्किंग उपकरण स्थापित होते हैं, जो इन सेवाओं को संभव बनाते हैं।
  - **सर्वर रूम** एक समर्पित स्थान होता है, जहाँ डेटा संग्रहीत करने तथा डिजिटल सेवाओं को संचालित करने वाले कंप्यूटर एवं सर्वर रखे जाते हैं।



क्लाउड मॉडल के प्रकार

- **पब्लिक क्लाउड :** इसमें किसी तृतीय पक्ष सेवा प्रदाता द्वारा उपलब्ध कराई गई अवसंरचना का उपयोग अनेक ग्राहकों द्वारा साझा रूप से किया जाता है।
  - **उदाहरण:** कोई व्यवसाय अथवा वीडियो स्ट्रीमिंग कंपनी साझा सर्वरों के माध्यम से लाखों दर्शकों को अपनी सेवाएँ प्रदान करती है।
- **प्राइवेट क्लाउड :** इसमें क्लाउड अवसंरचना केवल एक ही संगठन के उपयोग के लिए समर्पित होती है।
  - **उदाहरण:** कोई राज्य का कोषागार कार्यालय संवेदनशील प्रशासनिक अभिलेखों की सुरक्षा एवं उन पर बेहतर नियंत्रण बनाए रखने के लिए भुगतान और लेखा संबंधी डेटा को प्राइवेट क्लाउड पर संग्रहीत करता है।
- **हाइब्रिड क्लाउड:** इसमें पब्लिक एवं प्राइवेट क्लाउड दोनों प्रकार के परिवेशों का संयोजन किया जाता है।
  - **उदाहरण:** कोई नगर निगम संपत्ति कर भुगतान पोर्टल को पब्लिक क्लाउड पर तथा नागरिकों के व्यक्तिगत अभिलेखों को प्राइवेट क्लाउड पर संग्रहीत करता है।

क्लाउड सेवाओं के प्रकार

- **इन्फ्रास्ट्रक्चर एज अ सर्विस (IaaS):** इसके अंतर्गत उपयोगकर्ता भौतिक उपकरण खरीदने के बजाय वर्चुअल सर्वर, स्टोरेज एवं नेटवर्क जैसे कंप्यूटिंग संसाधनों को किराये पर प्राप्त कर सकते हैं।
  - **उदाहरण:** कोई ऑनलाइन रिटेलर अपनी वेबसाइट संचालित करने के लिए क्लाउड सर्वरों को किराये पर ले सकता है तथा त्योहारी बिक्री के दौरान वेबसाइट पर बढ़ने वाले ट्रैफिक के अनुरूप अपनी कंप्यूटिंग क्षमता में वृद्धि कर सकता है।
- **प्लेटफॉर्म एज अ सर्विस (PaaS):** यह डेवलपर्स को अंतर्निहित अवसंरचना का प्रबंधन किए बिना एप्लिकेशन विकसित करने, उनका परीक्षण करने एवं उन्हें लॉन्च करने के लिए आवश्यक उपकरण उपलब्ध कराता है।
  - **उदाहरण:** मोबाइल बैंकिंग एप्लिकेशन विकसित करने वाली कोई टीम अपने सॉफ्टवेयर के निर्माण एवं परीक्षण के लिए क्लाउड प्लेटफॉर्म का उपयोग कर सकती है।
- **सॉफ्टवेयर एज अ सर्विस (SaaS):** इसके अंतर्गत इंटरनेट के माध्यम से उपयोग के लिए तैयार सॉफ्टवेयर उपलब्ध कराया जाता है। इसमें सेवा प्रदाता सॉफ्टवेयर के अपडेट एवं रखरखाव का प्रबंधन करता है।
  - **उदाहरण:** वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के लिए जूम (Zoom)।
- **सर्वरलेस कंप्यूटिंग :** इसमें डेवलपर्स को सीधे सर्वरों का प्रबंधन किए बिना विशिष्ट कार्यों को संचालित करने की सुविधा मिलती है।
  - क्लाउड सेवा प्रदाता अंतर्निहित अवसंरचना का प्रबंधन करता है तथा आवश्यकता के अनुसार कंप्यूटिंग संसाधन उपलब्ध कराता है।
  - **उदाहरण:** कोई ऑनलाइन शॉपिंग प्लेटफॉर्म ग्राहक द्वारा खरीदारी पूरी करने पर ऑर्डर को स्वचालित रूप से प्रोसेस कर सकता है।

भारत को अधिक क्लाउड अवसंरचना की आवश्यकता क्यों है?

- भारत में बढ़ती डिजिटल गतिविधियों के कारण बड़ी मात्रा में डेटा उत्पन्न हो रहा है, जिसे संग्रहीत, प्रोसेस एवं सुरक्षित रखने की आवश्यकता है।
- मार्च 2026 तक देश में इंटरनेट ग्राहकों की संख्या 1,092.79 मिलियन तक पहुँच गई थी।
  - प्रति वायरलेस ग्राहक औसत डेटा खपत 25.51 GB प्रति माह रही, जबकि वित्त वर्ष 2025-26 के दौरान कुल वायरलेस डेटा उपयोग 2,85,376 पेटाबाइट तक पहुँच गया।
- क्लाउड अवसंरचना संगठनों को माँग बढ़ने के साथ अपनी कंप्यूटिंग क्षमता का विस्तार करने की सुविधा प्रदान करके इन आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायता करती है।
  - **उदाहरण:** कोई परीक्षा पोर्टल पंजीकरण अवधि के दौरान अपने कंप्यूटिंग संसाधनों में वृद्धि कर सकता है तथा पंजीकरण प्रक्रिया पूरी होने के बाद उन्हें कम कर सकता है।
- **भारत में क्लाउड सेवाएँ :** सितंबर 2026 तक भारत में 30 क्लाउड सेवा प्रदाताओं को सूचीबद्ध किया गया था।
  - भारतीय सेवा प्रदाताओं में जियो प्लेटफॉर्म्स, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (TCS), BSNL, ITI, रेलटेल, अडानीकनेक्स एवं योट्टा डेटा सर्विसेज शामिल हैं।
  - अंतरराष्ट्रीय सेवा प्रदाताओं में गूगल क्लाउड इंडिया, ओरेकल इंडिया, माइक्रोसॉफ्ट कॉर्पोरेशन इंडिया एवं अमेजन वेब सर्विसेज इंडिया शामिल हैं।
- **भारत की क्लाउड प्रणाली के आधार स्तंभ के रूप में डेटा सेंटर:** डेटा सेंटर में वे सर्वर एवं स्टोरेज सिस्टम स्थापित होते हैं, जो क्लाउड कंप्यूटिंग को संचालित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
  - अगस्त 2026 तक भारत की डेटा सेंटर क्षमता 1.57 GW तक पहुँच गई थी।
  - वर्ष 2030 तक इसके बढ़कर लगभग 8 GW होने का अनुमान है।

मेघराज क्या है?

- मेघराज भारत सरकार का क्लाउड पारितंत्र है।
- इसे वर्ष 2014 में इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY) द्वारा ई-गवर्नेंस को गति देने तथा सार्वजनिक क्षेत्र में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) पर होने वाले व्यय का अनुकूलन करने के उद्देश्य से प्रारंभ किया गया था।
- मेघराज 2.0 इस राष्ट्रीय क्लाउड कंप्यूटिंग पहल का दूसरी पीढ़ी का संस्करण है।

भारत द्वारा की गई प्रमुख पहलें

- **क्लाउड चयन रूपरेखा :** मार्च 2026 में इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY) ने क्लाउड चयन रूपरेखा जारी की। यह मंत्रालयों एवं विभागों को डेटा की संवेदनशीलता तथा महत्त्वपूर्ण प्रकृति के आधार पर उपयुक्त क्लाउड अवसंरचना का चयन करने के लिए व्यवस्थित दिशा-निर्देश प्रदान करती है।
- **फ्यूचरस्किल्स प्राइम कार्यक्रम:** इसे वर्ष 2021 में MeitY एवं नैसकॉम (NASSCOM) द्वारा प्रारंभ किया गया था। इसका उद्देश्य उभरती हुई प्रौद्योगिकियों के क्षेत्र में कौशल विकास को प्रोत्साहित करना है।
  - यूरोपीय आयोग की वर्ष 2024 की 'पैक्ट फॉर स्किल्स रिपोर्ट' में AI, क्लाउड कंप्यूटिंग एवं डेटा एनालिटिक्स के क्षेत्र में उद्योग-केंद्रित प्रशिक्षण के लिए इसे वैश्विक स्तर पर तीसरा स्थान प्राप्त हुआ।
- **राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान (NIELIT):** इस पहल को पूरक समर्थन प्रदान करते हुए NIELIT देशभर में 56 केंद्रों, 750 संबद्ध संस्थानों एवं 9,000 से अधिक सुविधा केंद्रों का संचालन करता है।
  - इसके माध्यम से क्लाउड कंप्यूटिंग, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), साइबर सुरक्षा, ब्लॉकचेन एवं इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT) जैसे क्षेत्रों में पेशेवरों को प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।

आगे की राह

- भारत का क्लाउड पारितंत्र तीव्रता से विस्तार कर रहा है। अनुमान है कि वर्ष 2030 तक देश की क्लाउड डेटा क्षमता में लगभग 4 से 5 गुना वृद्धि होगी।
- डेटा सेंटरों में निवेश से देश की घरेलू डेटा प्रसंस्करण एवं भंडारण क्षमता में वृद्धि हो रही है।
- लक्षित कौशल विकास पहलों के माध्यम से क्लाउड आधारित प्रौद्योगिकियों के लिए कुशल एवं प्रशिक्षित कार्यबल तैयार किया जा रहा है।
- ये सभी प्रयास सामूहिक रूप से नवाचार को प्रोत्साहित कर रहे हैं तथा क्लाउड कंप्यूटिंग को भारत के दीर्घकालिक डिजिटल परिवर्तन का एक महत्त्वपूर्ण आधार स्तंभ बना रहे हैं।

स्रोत: PIB

संक्षिप्त समाचार

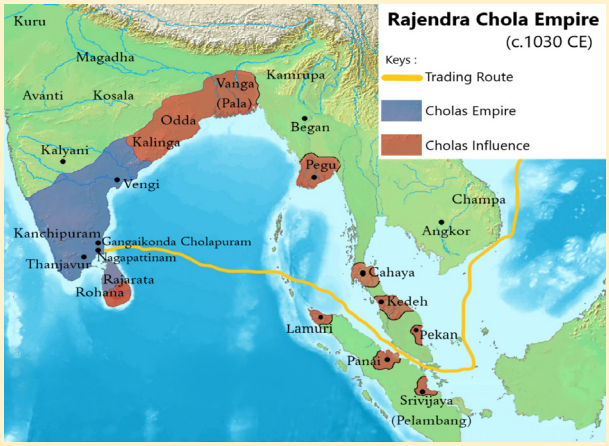
चोलकालीन मूर्तियाँ तमिलनाडु में उत्खनन के दौरान प्राप्त

चर्चा में क्यों?

- तमिलनाडु राज्य पुरातत्व विभाग (TNSDA) ने नागपट्टिनम में जारी उत्खनन के दौरान भगवान नटराज एवं देवी शिवगामी की कांस्य मिश्रधातु से निर्मित मूर्तियों के साथ उनके संबंधित पीठिकाओं को प्राप्त किया है।

चोल वंश

- चोल वंश 10वीं से 13वीं शताब्दी के दौरान प्रायद्वीपीय भारत की एक प्रमुख राजनीतिक शक्ति था।



- राजराज प्रथम, राजेंद्र प्रथम एवं राजाधिराज प्रथम जैसे शासकों के नेतृत्व में चोलों ने श्रीलंका एवं दक्षिण-पूर्व एशिया में सैन्य विजयों के माध्यम से अपने साम्राज्य का विस्तार किया।
- उपजाऊ कावेरी डेल्टा पर उनका नियंत्रण उनकी आर्थिक समृद्धि का एक प्रमुख आधार था। इससे कृषि, व्यापार एवं नगरीय विकास को प्रोत्साहन मिला।
- चोल अर्थव्यवस्था का आधार नागरम नामक वाणिज्यिक नगर थे, जो व्यापारी समूहों को धार्मिक संस्थानों से जोड़ते थे।
- मंदिरों, विशेषकर ब्राह्मणवादी मंदिरों ने धार्मिक अनुष्ठानों एवं विलासिता से संबंधित वस्तुओं की माँग उत्पन्न करके क्षेत्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय व्यापार को प्रोत्साहित किया।
- **मंदिर आधारित नगरीकरण :** इससे तात्पर्य मंदिरों, व्यापार एवं नगरों के विकास के बीच विद्यमान घनिष्ठ संबंध से है।

हाल ही में प्राप्त मूर्तियाँ

- **भगवान नटराज की मूर्ति:** इसमें भगवान नटराज को 'आनंद तांडव' की मुद्रा में दर्शाया गया है। इस मूर्ति की चार भुजाएँ हैं तथा इसकी ऊँचाई 110 सेंटीमीटर और चौड़ाई 100 सेंटीमीटर है।
- **देवी शिवगामी की मूर्ति:** इसमें देवी को 'त्रिभंग' मुद्रा में दर्शाया गया है। इस मूर्ति की दो भुजाएँ हैं तथा इसकी ऊँचाई 82 सेंटीमीटर और चौड़ाई 23 सेंटीमीटर है।

प्रमुख विशेषताएँ

- मूर्तियों की भौतिक संरचना, प्रतिमा विज्ञान संबंधी विशेषताओं , अलंकरण की शैली एवं पीठिकाओं के निर्माण के आधार पर इनके 12वीं शताब्दी ईस्वी का होने का अनुमान लगाया गया है।
- ये मूर्तियाँ चोल काल से संबंधित हैं तथा इन्हें लगभग एक मीटर की गहराई पर उत्खनन के दौरान प्राप्त किया गया है।

इस खोज का महत्त्व

- ये खोजें चोल काल के दौरान नागपट्टिनम में प्रचलित धार्मिक प्रथाओं, कला एवं धातु मूर्तिकला के इतिहास को समझने के लिए महत्त्वपूर्ण पुरातात्त्विक साक्ष्य प्रदान करती हैं।

स्रोत: TH

राष्ट्रीय एकता दिवस

संदर्भ

- राष्ट्रीय एकता दिवस प्रतिवर्ष 31 अक्टूबर को मनाया जाता है।

राष्ट्रीय एकता दिवस के बारे में

- इस दिवस की शुरुआत वर्ष 2014 में की गई थी। यह भारत के प्रथम उपप्रधानमंत्री एवं गृहमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती के अवसर पर मनाया जाता है।
- सरदार पटेल ने वी.पी. मेनन के साथ मिलकर कूटनीति एवं वार्ता के माध्यम से 560 से अधिक देशी रियासतों का भारतीय संघ में एकीकरण करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
- **वर्ष 2026 की थीम:** 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' , जो राष्ट्रीय एकीकरण एवं विविधता में एकता की भावना को रेखांकित करती है।

क्या आप जानते हैं?

- केंद्रीय गृह मंत्रालय (MHA) द्वारा वर्ष 2019 में सरदार पटेल राष्ट्रीय एकता पुरस्कार की स्थापना की गई थी।
- इसका उद्देश्य राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता को बढ़ावा देने की दिशा में उत्कृष्ट योगदान देने वाले व्यक्तियों को सम्मानित करना है।

स्रोत: AIR

राजकोषीय घाटा

संदर्भ

- पूंजीगत व्यय एवं सब्सिडी पर सरकारी व्यय में निरंतर वृद्धि के कारण वित्त वर्ष 2026-27 (FY27) की प्रथम छमाही में भारत का राजकोषीय घाटा बढ़ गया।

परिचय

- सितंबर के अंत तक राजकोषीय घाटा 7.14 ट्रिलियन रुपये (7.14 लाख करोड़ रुपये) तक पहुँच गया, जो पूरे वित्त वर्ष के बजट अनुमान का 42.1% है।

- वित्त वर्ष 2026-27 की पहली छमाही में ही बजट में निर्धारित राजकोषीय घाटे का अपेक्षाकृत बड़ा हिस्सा व्यय हो जाना सरकार के राजकोषीय संतुलन पर बढ़ते दबाव को दर्शाता है।
- केंद्र सरकार ने वित्त वर्ष 2026-27 के लिए राजकोषीय घाटे का लक्ष्य 16.96 ट्रिलियन रुपये (16.96 लाख करोड़ रुपये) अथवा GDP का 4.3% निर्धारित किया है।
  - इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सरकार आगामी महीनों में सुदृढ़ कर संग्रह एवं गैर-कर राजस्व में वृद्धि पर निर्भर है।

राजकोषीय घाटा क्या है?

- राजकोषीय घाटा किसी वित्तीय वर्ष के दौरान सरकार के कुल बजटीय व्यय (राजस्व एवं पूंजीगत व्यय) और कुल बजटीय प्राप्तियों (राजस्व एवं पूंजीगत प्राप्तियाँ) के बीच का अंतर है, जिसमें उधार को कुल प्राप्तियों में शामिल नहीं किया जाता है।
- **राजकोषीय घाटे का सूत्र:** राजकोषीय घाटा = कुल व्यय – (राजस्व प्राप्तियाँ + ऋणेतर पूंजीगत प्राप्तियाँ)

राजकोषीय घाटे के प्रभाव

- **मुद्रास्फीतिक दबाव :** निरंतर उच्च राजकोषीय घाटा मुद्रास्फीति को बढ़ावा दे सकता है, क्योंकि सरकार घाटे के वित्तपोषण के लिए केंद्रीय बैंक द्वारा जारी मुद्रा पर निर्भर हो सकती है।
- **क्राउडिंग आउट प्रभाव :** जब सरकार अपने घाटे के वित्तपोषण के लिए वित्तीय बाजारों से उपलब्ध धन का बड़ा हिस्सा उधार लेती है, तो निजी क्षेत्र के लिए ऋण की उपलब्धता कम हो सकती है। इससे व्यवसायों एवं व्यक्तियों के निजी निवेश पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।
- **राजकोषीय गुंजाइश में कमी :** उच्च राजकोषीय घाटा आर्थिक झटकों अथवा संकटों से निपटने के लिए सरकार की अतिरिक्त व्यय करने की क्षमता को सीमित कर देता है।
- **उधार लेने में कठिनाई :** जब सरकार की वित्तीय स्थिति कमजोर होती है, तो उसके बॉण्ड की माँग घटने लगती है। ऐसी स्थिति में सरकार को ऋणदाताओं को आकर्षित करने के लिए अधिक ब्याज दरों की पेशकश करनी पड़ती है।

स्रोत: LM

विकसित भारत के लिए बैंकिंग पर उच्चस्तरीय समिति

संदर्भ

- भारत सरकार ने विकसित भारत के लिए बैंकिंग पर एक उच्चस्तरीय समिति का गठन किया है। इस समिति की अध्यक्षता पूर्व केंद्रीय सतर्कता आयुक्त सुरेश एन. पटेल कर रहे हैं।

समिति के विचारार्थ विषय

- समिति वर्तमान बैंकिंग प्रथाओं, विवेकपूर्ण नियामकीय मानदंडों एवं अंतरराष्ट्रीय सर्वोत्तम प्रथाओं का परीक्षण करेगी, ताकि वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी भारतीय बैंकों के निर्माण के लिए एक कार्ययोजना तैयार की जा सके।
- वर्ष 2047 तक कम-से-कम एक या दो भारतीय बैंकों को विश्व के शीर्ष 20 बैंकों में शामिल करने के लक्ष्य के साथ, अंतरराष्ट्रीय स्तर के अग्रणी बैंकिंग संस्थानों से प्रतिस्पर्धा करने में सक्षम भारतीय बैंकों के निर्माण हेतु रोडमैप तैयार करना।
  - वर्तमान स्थिति के अनुसार, शीर्ष 100 वैश्विक बैंकों की सूची में भारतीय सार्वजनिक क्षेत्र का केवल भारतीय स्टेट बैंक (SBI) शामिल है। नवीनतम सूची में इसकी रैंकिंग 43वें स्थान से गिरकर 45वें स्थान पर आ गई है।
  - HDFC बैंक शीर्ष 100 में शामिल एकमात्र अन्य भारतीय बैंक है, जिसकी रैंकिंग 73वें स्थान से गिरकर 76वें स्थान पर आ गई है।
- समिति बैंकिंग संस्थानों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) एवं डिजिटल नवाचार को अपनाने के लिए एक कार्ययोजना तैयार करेगी। साथ ही, साइबर सुरक्षा संबंधी जोखिमों से बचाव के लिए आवश्यक सुरक्षा उपायों की सिफारिश करेगी।
- समिति ऋण तक पहुँच का विस्तार करने में उनकी प्रभावशीलता का आकलन करने के लिए मौजूदा प्राथमिकता क्षेत्र ऋण (PSL) ढाँचे एवं अग्रणी बैंक योजना की समीक्षा करेगी।

स्रोत: IE

डॉ. होमी जहाँगीर भाभा

संदर्भ

- डॉ. होमी जहाँगीर भाभा को भारत के परमाणु कार्यक्रम के जनक के रूप में स्मरण किया जाता है।

परिचय

- होमी जहाँगीर भाभा का जन्म 30 अक्टूबर, 1909 को हुआ था।
- उन्होंने भारत के त्रि-चरणीय परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम की अवधारणा विकसित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- उन्होंने वर्ष 1955 में जिनेवा में आयोजित परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग पर प्रथम संयुक्त राष्ट्र अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन की अध्यक्षता की थी।

वैज्ञानिक योगदान

- **भाभा प्रकीर्णन:** उन्होंने इलेक्ट्रॉन एवं पॉजिट्रॉन के बीच प्रकीर्णन की प्रायिकता की गणना की। इस प्रक्रिया को भाभा प्रकीर्णन कहा जाता है। यह कण भौतिकी से संबंधित प्रयोगों में महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुई।

- **कॉस्मिक रे शॉवर्स का सिद्धांत :** वाल्टर हिटलर के साथ मिलकर उन्होंने कॉस्मिक रे शॉवर्स का सिद्धांत विकसित किया।
  - इस सिद्धांत के माध्यम से यह समझाया गया कि उच्च ऊर्जा वाले ब्रह्मांडीय कण जब पृथ्वी के वायुमंडल में प्रवेश करते हैं, तो वे द्वितीयक कणों की श्रृंखलाबद्ध बौछार उत्पन्न करते हैं।

भारत के परमाणु कार्यक्रम की संस्थागत नींव

- **टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च (TIFR):** वर्ष 1945 में टाटा ट्रस्ट के सहयोग से भाभा ने मुंबई में TIFR की स्थापना में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा इसके प्रथम निदेशक बने।
- **परमाणु ऊर्जा आयोग (AEC):** वर्ष 1948 में परमाणु ऊर्जा आयोग की स्थापना में भाभा ने प्रमुख भूमिका निभाई तथा इसके प्रथम अध्यक्ष बने।
- **परमाणु ऊर्जा विभाग (DAE):** इसकी स्थापना वर्ष 1954 में की गई थी। यह सीधे प्रधानमंत्री के प्रभार के अधीन स्थापित किया गया तथा होमी भाभा इसके प्रथम सचिव बने।
- **परमाणु ऊर्जा प्रतिष्ठान, ट्रॉम्बे (AEET):** वर्ष 1954 में भाभा के नेतृत्व में मुंबई के ट्रॉम्बे में परमाणु ऊर्जा प्रतिष्ठान की स्थापना की गई।
  - बाद में वर्ष 1967 में उनके सम्मान में इसका नाम बदलकर भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र (BARC) कर दिया गया।

पुरस्कार एवं सम्मान

- वर्ष 1942 में उन्हें एडम्स पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- वर्ष 1954 में उन्हें भारत के तीसरे सर्वोच्च नागरिक सम्मान पद्म भूषण से सम्मानित किया गया।
- उन्हें वर्ष 1951 तथा 1953 से 1956 के बीच भौतिकी के नोबेल पुरस्कार के लिए भी नामांकित किया गया था।

स्रोत: DD News

बिहार संग्रहालय विश्व के शीर्ष 10 संग्रहालयों में सम्मिलित

संदर्भ

- पटना स्थित बिहार संग्रहालय को वर्ष 2026 के विश्व के 100 सर्वश्रेष्ठ संग्रहालयों की सूची में एशिया का शीर्ष संग्रहालय तथा वैश्विक स्तर पर नौवाँ स्थान प्राप्त हुआ है। यह रैंकिंग एक जर्मन यात्रा गाइड एवं डिजिटल पत्रिका द्वारा जारी की गई है।

परिचय

- इस रैंकिंग सूची में 142 देशों के 3,800 संग्रहालयों एवं अन्य प्रदर्शनी स्थलों को शामिल किया गया था।
- पात्रता के लिए संग्रहालयों में एक स्थायी संग्रह अथवा ऐसी प्रदर्शनी का होना आवश्यक था, जो आम जनता के लिए खुली हो।
- इस रैंकिंग में निम्नलिखित श्रेणियों को शामिल किया गया था:
  - कला संग्रहालय
  - इतिहास एवं पुरातत्व संग्रहालय
  - विज्ञान एवं प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय
  - प्रौद्योगिकी एवं परिवहन संग्रहालय
  - खुले परिसर वाले संग्रहालय

Top 10 Museums in the World 2026

Rank	Museum	Country
1.	Museo Nacional de Antropología	Mexico
2.	Museo del Prado	Spain
3.	Louisiana Museum of Modern Art	Denmark
4.	State Hermitage Museum	Russia
5.	Kunsthistorisches Museum	Austria
6.	Şanlıurfa Archaeology Museum	Türkiye
7.	Museum of the Second World War	Poland
8.	National WWII Museum	United States
9.	Bihar Museum	India
10.	Metropolitan Museum of Art	NY, United States

बिहार संग्रहालय के बारे में

- बिहार संग्रहालय का उद्घाटन वर्ष 2015 में किया गया था तथा इसके विकास एवं निर्माण का कार्य आगामी वर्षों में भी जारी रहा।
- इसका वास्तुशिल्पीय डिजाइन जापानी वास्तुकार फुमिहिको माकी के नेतृत्व में तैयार किया गया था। उन्हें प्रतिष्ठित प्रित्ज़कर वास्तुकला पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है।
- संग्रहालय के सबसे प्रसिद्ध एवं महत्त्वपूर्ण पुरावशेषों में दीदारगंज यक्षी की मूर्ति शामिल है।
  - यह मौर्यकालीन मूर्तिकला का एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जो अपनी विशिष्ट चमकदार पॉलिश एवं सूक्ष्म शिल्पकारी के लिए प्रसिद्ध है।
- संग्रहालय की दीर्घाओं में मौर्य, गुप्त एवं पाल काल से संबंधित विरासत के साथ-साथ बौद्ध एवं जैन धर्म की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहर को भी संरक्षित किया गया है।
- यह संग्रहालय भारत के अतीत को आकार देने वाली विभिन्न ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक परंपराओं की महत्त्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है।

स्रोत: IE

■■■■